यादों में हैं बसे ... एक मार्गदर्शक

अजीब सा सन्नाटा है आज.. शब्दों के घेरे में भी इस खामोशी को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि शायद वे (शब्द) भी इठलाने की आदत से बेखबर हुए है। प्रकृति भी मानो जीवन व मरण नियति के समक्ष स्वयं को लाचार महसूस कर रही हो।

न जाने क्यों पापा के इस जन्मदिन पर उन्हें (बाबूजी) संबोधित करने का दिल चाह रहा है। शायद इसलिए कि वह अपने पिताजी को (बाबूजी) कहते थे। बाबा के बारे अनेकों अनसुनी बातें और उनके साथ बिताए अपने अनुभवों को वह अक्सर हम सब से साझा किया करते थे।

आज इस जन्मदिन पर पापा को ऐसे स्मरण करने में.. निःसंदेह उन्हें आत्मिक सुख-शांति का अहसास प्राप्त होगा। इसके पीछे महज़ सिर्फ यही वजह नहीं, ऐसा लगता है कि, इससे शायद हमारे अशांत मन को भी उनसे अलग होने की इस पीड़ा में महरम लगाने का काम कर सके। दरअसल मकसद सिर्फ उन्हें याद करते हुए अंतर्मन से जन्मदिन पर नमन करते हुए शुभकामनाएं देने का प्रयास किया जा रहा है। इस वर्ष(2022) भले ही पापा आज हमारे बीच नहीं है...खयालों में ही छुपी रहेंगी, उन के साथ बिताए लम्हों के बेशुमार यादगार किस्से- कहानियाँ ,जो हमें वह सुनाया करते थे। 'कॉफी कप' के साथ बातचीत करना तो उनका पसंदीदा शौक हुआ करता था। हर विषय पर लिखना और उसका सटीक वर्णन करने में उन्हें महारत हासिल थी। उनसे मिली इस विरासत को संजोये रखना होगा।

Doing very well. But...Why so much labor, once it is confirmed that you are good writer/ journalist.

Do it when you find something good or bad in any society or country. WELL DONE ! PaPa [wrote on 7th April 2021)

उन्होंने यह उपयुक्त लाइनें दैनिक भास्कर से जुड़े रहते, मेरे प्रकाशित हुए लेखों की सराहना करते हुए लिखे। भास्कर में लेखों को निर्धारित समय (deadlines) पर भेजने में हुई व्यस्तता से चिन्तित हुआ करते थे। दरअसल पापा द्वारा लिखे शब्दों ने निसंदेह लेखन के इस सफर में नये लक्ष्य को हासिल करने के लिए दिशा दी। वह अक्सर मुझे सोशल नेटवर्किंग साइट को ज्वॉइन करने की सलाह दिया करते थे। वह स्वयं भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपने लोगों से जुड़े रहते थे। वह अपने फॉलोअर्स के साथ काफी समय फेसबुक और यूट्यूब पर बिताया करते रहे।

उनका मेरे पर विश्वास.. उनके लिखित हर एक शब्द ,सुझाव और हिदायत के अलावा प्रेरणादायी होते थे। आशाओं से भरे अपने शब्दों की वर्षा से ...हमें साहस देते रहे। मौके व अनावश्यक परिस्थितियों में भी वे उत्साहवर्धक प्रतीत होते। हम सब ने अगर मुश्किलों का सामना करना उनसे सीखा, तो जिन्दगी को जीने का अंदाज भी उन्हीं से विरासत में पाया। लम्बे समय से अप्रवासी होने के कारण मैं उनके दिल के करीब रही। परिवार के हर सदस्य इससे भलीभांति परिचित भी थे। शब्दों का प्रयोग चाहे सरल हों, लेकिन जब वह बड़ों से आशीर्वाद के रूप में प्राप्त हों, तो वह अत्यंत महत्वपूर्ण व खास होते हैं। ऐसे ही 'शब्दों की ताकत' से लड़ना सीखा और एक नई ऊर्जा के साथ.. अपनी भावनाओं को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। यूं तो वह (पापा) अब बहुत दूर चले गये हैं , फिर भी आज उनकी विचारधारा हमें कुछ अलग कर गुजरने के लिए प्रेरित करती आ रही है। इसी का परिणाम यह है कि आज **12july 2022 पापा के 94वें जन्मदिवस पर Mere Shabd.com** ब्लॉग की शुरुआत कर रही हूं । इसके माध्यम से सबसे रूबरू होने के अवसर पर बेहद प्रसन्नता हो रही है।

दूरियों में भी हमेशा हर पल आप को पाया, आपके बिना जीने की आदत नहीं,

हर खुशी, मेरा साहस, हर परेशानी का हल रहे , मेरी ताकत हुई खामोश अब,

जाना भी दे गया जिन्दगी में एक सीख, आखिर खुद से ही कराई पहचान मेरी।